



Sample Papers for Class 11

AglaSem School

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र- E

खण्ड 'क'

1. (क) श्रम के नियमों के अभाव में मजदूर-मालिक, अमीर-गरीब, सेठ-आसामी के चुभते हुए भेदों का शिकार हो गया।

(ख) शरीर के लिए श्रम आवश्यक इसलिए कहा गया है ताकि मनुष्य जीवित रहे।

(ग) पुश्तैनी सम्पत्ति के भरोसे जीवन-यापन करने को लेखक ने इसलिए बुरा कहा है, क्योंकि इससे मनुष्य निकम्मा, आलसी और लालची बन जाता है।

(घ) श्रम की नींव पर बनने वाला जीवन सबसे उत्तम इसलिए बताया गया है, क्योंकि यह मनुष्य को भीतरी संतोष देता है। यह आर्थिक बँटवारे को न्यायपूर्ण बनाता है और लोगों को लालच, ईर्ष्या, लाभ आदि बुराईयों से बचाता है।

(ङ) शीर्षक—श्रम का महत्त्व।

2. (क) 'फूल बौने' का प्रतीकार्थ है 'सभ्य आचरण, अच्छाई से परिपूर्ण व्यवहार।' 'काँटे बौने' का प्रतीकार्थ 'बुराई', 'स्वार्थपरता'। दूसरों के प्रति अच्छाई एवं सदाचार के साथ व्यवहार करना फूल बौने के समान है जबकि दूसरों का शोषण करना उनके साथ बुरा आचरण करना, काँटे बौने के समान है।

(ख) जीवन में आई विपरीत परिस्थितियों से मन अशान्त हो जाता है, दुःख का अनुभव करता है परन्तु यदि इन विकट स्थितियों में प्रेम, त्याग, ममता से परिपूर्ण व्यवहार किया जाता है, तो कटु शक्तियों का नाश स्वयं ही हो जाता है और व्यक्ति विषम स्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है और मन को शान्ति का अनुभव होता है।

(ग) संकट पड़ने पर मनुष्य का व्यवहार हिम्मत एवं संयम से परिपूर्ण होना चाहिए। विकट परिस्थितियों में मनुष्य अगर अपने अन्दर साहस और हिम्मत बनाए रखे तो बड़ी-से-बड़ी मुसीबत भी टल जाती है और हम अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

(घ) जब मनुष्य को अपने व्यवहार के अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त नहीं होती, जब वह निरन्तर स्वार्थ एवं लोभ के वातावरण में जीता है, तो उसका मन में कटुता आना स्वाभाविक है। मन की कटुता को केवल त्याग, ममता, प्रेम जैसे उच्च आदर्शों को अपनाकर व्यवहार में क्रियान्वित करके ही दूर किया जा सकता है।

(ङ) (i) फूल बोना (सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना)—मदर टेरेसा के द्वारा की गयी समाज सेवा मनुष्य के द्वारा फूल बोने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

(ii) काँटे बोना (समाज में बुराई फैलाना)—ब्रिटिश काल में किसानों के प्रति बड़े जमींदारों का व्यवहार समाज में काँटे बोने के समान था।

खण्ड 'ख'

3. लोकतंत्र का महत्त्व

विश्व की शासन प्रणालियों में लोकतंत्र सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र की परिभाषा इस प्रकार दी है—“लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है।

लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि विधायिका में पहुँचकर जनहित का ध्यान रखते हुए शासन का संचालन करते हैं। भारत के लिए यह गर्व की बात है कि यहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के

पश्चात् प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया गया। भारत में प्रजातांत्रिक शासन प्रणालियों की अच्छाइयों को ग्रहण कर एक नया रूप दिया गया है। कुछ विशेषताएँ इंग्लैण्ड, अमेरिका, स्विस् से ली गयी हैं। हमारे देश का प्रधान राष्ट्रपिता होता है। उसकी अधीनता में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें काम करती हैं। राष्ट्रपति जल, थल, वायु सेना का प्रधान होता है। देश की केन्द्रीय सरकार का प्रधान प्रधानमंत्री कहा जाता है। वह संसदीय दल का नेता होता है। केन्द्र में दो सदन होते हैं—लोकसभा तथा राज्यसभा। लोकसभा की 542 सीटें हैं जिनका चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली द्वारा किया जाता है। जनता अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनती है। लोकसभा में जो दल बहुमत प्राप्त कर लेता है उसी की सरकार बनती है। इसी प्रकार राज्य सरकारों में भी राज्य स्तर पर दो सदन होते हैं—विधानसभा तथा विधान परिषद्। विधान सभा के सदस्य भी प्रत्यक्षतया चुने जाते हैं। राज्य सरकारें अपने मुख्यमंत्री के निर्देशन में कार्य करती हैं। राज्य सरकारों तथा केन्द्र सरकार के बीच कार्यों का विभाजन केन्द्र सूची, राज्य सूची तथा समवर्ती सूची में लिखित कार्यों द्वारा किया जाता है। केन्द्र सूची में केन्द्र के कार्य एवं अधिकार विषय हैं साथ राज्य सूची में राज्य के अधिकार विषय हैं तथा समवर्ती सूची में दोनों के अधिकार विषय हैं। इस प्रकार राज्य सरकारें स्वतंत्र तथा केन्द्र के अधीन रहकर कार्य करती हैं। आपातकाल के समय सारी शक्ति राष्ट्रपति के पास पहुँच जाती है तथा राज्य सरकार के विफल हो जाने पर राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाता है। राज्यों में राज्यपाल केन्द्र का प्रतिनिधि होता है।

हमारे देश का संविधान लिखित है। उसे 26 जनवरी, सन् 1950 को लागू किया गया था। संविधान सर्वोच्च है उसी के अनुरूप कार्य होता है, व्यक्ति विशेष की सर्वोच्चता स्वीकार नहीं की गयी है। हमारे शासन के तीन अंग हैं—व्यवस्थापिका, जो कानून बनाती है, कार्यपालिका, जो कानून का पालन कराती है तथा न्यायपालिका, जो कानून की अवहेलना करने वाले को दण्ड देती है। न्यायपालिका स्वतंत्र है। इस प्रकार से हमारे देश का प्रधानमंत्री शक्तिशाली होता है। संकट काल में राष्ट्रपति शक्तिशाली हो जाता है तथा दोनों शक्तिशालियों के ऊपर न्यायपालिका का शिकंजा रहता है। इस प्रकार कोई भी मनमानी नहीं कर सकता है।

भारतवर्ष में दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। कहा जाता है कि प्रजातंत्र विशाल देश के लिए उपयुक्त नहीं होता है। भारत एक विशाल भू-भाग वाला ही नहीं अपितु विश्व में द्वितीय सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। किन्तु यहाँ प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था ही है।

4. सेवा में,

निदेशक

समाज कल्याण निदेशालय,

लखनऊ।

महोदय,

आजकल परिजनों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण समाज में वरिष्ठ नागरिकों की दयनीय दशा चिन्ता का विषय बनती जा रही है। वरिष्ठ नागरिकों का हमारे पालन पोषण व जीविका को प्राप्त कराने में योगदान रहा है। अब जब वह शारीरिक व आर्थिक रूप से अशक्त हैं तो हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए, कल हम भी उनकी श्रेणी में आ जायेंगे, तब हमारी भी यही जरूरतें होंगी।

आपसे मेरा विनम्र निवेदन है कि आप अपने अधीनस्थ समस्त जिला समाज कल्याण अधिकारियों को निर्देशित करें कि ऐसे असहाय व दुःखी वरिष्ठ नागरिकों की प्रार्थना पर अविलम्ब ध्यान दें तथा उनको (वृद्धाश्रम या वृद्ध-गृह खुलवाकर) उचित सहायता व सुरक्षा प्रदान करने की कार्यवाही करें।

सधन्यवाद।

भवदीय,

धर्मेश कुमार चतुर्वेदी

27/35, वजीरपुरा, आगरा।

दिनांक :

5. (i) प्रिन्ट माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अधिक लोकप्रिय इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं, क्योंकि इसमें शब्द, ध्वनि और दृश्य तीनों का मेल होता है। इन्हें निश्चित समय पर निश्चित क्रम में सुनना पड़ता है।

(ii) अंश कालिक संवाददाता वह होता है जो किसी एक पत्र से सम्बद्ध नहीं होता। किसी भी पत्र के लिखता और पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

(iii) 'बाइट' का अर्थ है—कथन। जब एंकर सूचना के साथ-साथ किसी प्रत्यक्षदर्शी या सम्बन्धित व्यक्ति का कथन या बातचीत भी दिखलाता है तो उसे 'एंकर बाइट' कहते हैं। इससे समाचारों की प्रामाणिकता बढ़ती है।

(iv) मीडिया को 'लोकतंत्र का चौथा खम्भा' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि मीडिया ही स्वस्थ जनमत का निर्माण करती है और स्वस्थ जनमत से ही सरकार स्थापित होती है।

(v) बीट रिपोर्टर उसे कहते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र से सम्बन्धित नए तथ्यों की आरम्भिक जानकारी देता है। इसमें कहाँ, कब, क्या, किसने किया—इतनी जानकारी पर्याप्त होती है।

6. रिपोर्ट (विदाई समारोह)

हिन्दी अध्यापक श्री कृष्णकान्त उपाध्याय सेवा-निवृत्त

मई माह में विद्यालय के हिन्दी अध्यापक श्री कृष्ण कान्त उपाध्याय अपनी 30 वर्ष की प्रशंसनीय सेवा के बाद सेवा-निवृत्त हो गये। वे छात्रों में काफी लोकप्रिय थे। विद्यालय ने उनके सम्मान में **विदाई पार्टी** का आयोजन किया। 2 जून को दोपहर दो बजे विद्यालय के हॉल में विदा समारोह शुरू हुआ। बड़ी संख्या में विद्यार्थी और अध्यापकगण उपस्थित थे। 'प्राचार्य ने उपाध्याय जी के सम्मान में विदाई भाषण दिया। उन्होंने उपाध्याय जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उपाध्याय जी को विद्यालय की ओर से स्मृति चित्र स्वरूप विद्यालय का मॉडल भेंट किया गया। अध्यापकों व विद्यार्थियों की ओर से भी उन्हें अनेक उपहार दिये गये। श्री कृष्ण कान्त उपाध्याय अपने विदाई भाषण में भावुक हो उठे। उन्होंने हाथ जोड़कर सभी का धन्यवाद किया। सहभोज के साथ समारोह का अन्त हो गया।

अथवा

फीचर—शहरों का दम घोटू वातावरण

शहरों (महानगरों) का जीवन आकर्षण और अभिशाप दोनों ही हैं। सर्वत्र समस्याएँ हैं। आवास, भोजन, स्वास्थ्य, यातायात विकराल रूप धारण किए हुए हैं न शुद्ध जल न शुद्ध दूध। शुद्ध वायु व खुली धूप मौलिक चाह है पर मिलता है तो प्रदूषण। सामान्य लोगों के लिए अपने कार्य स्थल पर पहुँचना भी एक समस्या बन गयी है। निवासियों की

मानवीय संवेदना शून्य हो गयी है। दायरे व जीवन में व्यस्तता के साथ सिकुड़ाव आ गया है। व्यक्तिगत व सामाजिक दायित्व का सफल निर्वहन दुष्कर हो गया है। इस प्रकार शहरों का दमधौंटा वातावरण व परिस्थितियाँ मनुष्य के लिए अभिशाप बन गयी हैं।

अथवा

गोदामों में सड़ता अनाज और भूख से तड़पते लोग (आलेख)

देश में अब पर्याप्त खाद्यान्न हैं, हर वर्ष किसानों से खरीदा गया अन्न राज्य भण्डार निगमों के गोदामों में पड़ा सड़ रहा है। जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुँच पा रहा है और लोग भूख से तड़पकर मर रहे हैं। इस ओर न तो प्रशासन और न ही सरकार का ध्यान है। यहाँ कमी नहीं कुव्यवस्था का बोलवाला है। सरकार को नीति बदलनी होगी। प्रशासन को आदेश पारित करें कि भूखे लोगों को अतिरिक्त भण्डार में से अन्न का वितरण करें। सही निर्णय न लेने पर अनाज गोदामों में सड़कर नष्ट हो जायेगा और जनता अनाज के अभाव में मरेगी। सरकार अविलम्ब इस ओर ध्यान दो।

अथवा

बाढ़ की विभीषिका

बाढ़ की विनाश लीला का भयंकर दृश्य—इस बार हुई भीषण वर्षा के कारण कोसी नदी का जल अपनी सीमाओं को तोड़ता हुआ उफन पड़ा था। कोसी जैसे अपने होश में नहीं थी संयमहीन होकर मर्यादा तजकर यह मदोन्मत्त-सी बनी प्रलय मचाने के लिए कटिबद्ध थी। उसके दोनों किनारे टूट गये और जल की तीव्र धाराएँ भयंकर गर्जना करती हुई चारों ओर फैल गयीं थीं। चारों ओर मानो जल ही जल छा गया जैसे समुद्र ने डूब गये, खेतों में झूमती हुई फसलें वरुण देव की भेंट चढ़ गई। जिन फसलों को किसानों ने अपने खून-पसीने से सींचा था, उनकी आशाएँ, अभिलाषाएँ, मुस्कुरा रही थी, निर्दय हृदय वाली घाघरा ने उन पर तनिक भी दया, ममता नहीं दिखलाई अपने बड़प्पन पर इठलाने वाले बड़े-बड़े वृक्ष भी कोसी की चपेट में आने से न बच सके जल के तीव्र आघातों ने उन्हें समूल उखाड़ फेंका। बाढ़ के इस प्रलयकारी रूप से चारों ओर हाहाकार मच गया। गाँव के गाँव बाढ़ में डूबने लगे। झोंपड़ियाँ बह गई और बड़े-बड़े मकान धराशायी हो गये। गाय, बैल आदि पशुगण क्षुद्र जीव-जन्तुओं की भाँति जल में तैरने लगे। आज कोई भी उन्हें बचाने वाला नहीं था। बचाता भी कौन जबकि सबको स्वयं अपने प्राणों के ही लाले पड़े हुए थे। माताओं की गोद से उनके बालक बिछुड़ रहे थे। कई परिवार बिल्कुल ही डूब गये थे। बड़ा भीषण दृश्य था। स्त्रियों का आर्तनाद, अबोध बालकों की चीत्कार, घायलों और पीड़ितों की चीत्कार ने वातावरण की भयंरता को और भी अधिक तीव्र बना दिया था।

खण्ड 'ग'

7. (i) चंपा कवि की किसी बात का उत्तर नहीं दे पाती। निरुत्तर होजाने पर भी वह पढ़ाई-लिखाई के चक्र में नहीं पड़ना चाहती इसलिए यहाँ कह पाती है कि तुम झूठे हो।

(ii) चंपा पढ़ाई-लिखाई के लाभों के विरोध में कहती है (1) कवि सरासर झूठ बोलता है। (2) वह शादी नहीं करेगी इसलिए बालक के पत्र पढ़ने और लिखने की जरूरत भी नहीं रहेगी। (3) यदि शादी हो गयी तो वह बालक को अपने पास रखेगी।

(iii) चंपा अपने बालक को अपने साथ सदा अपनी नजरों के सामने रखेगी और कलकत्ते नहीं जाने देगी।

(iv) कलकत्ता जाने वाले महानगरीय चकाचौंध में खो जाते हैं और गाँव घर-बार को बिल्कुल भूल जाते हैं इसलिए वह कलकत्ता नगरी पर क्रोधित हो वज्र गिराने की बात करती है।

(ख) (i) रचयिता—भवानी प्रसाद मिश्रा।

कविता—घर की याद।

(ii) कवि 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के कारण जेल में बंद है। यद्यपि उसकी माँ को इस बात का गर्व है। फिर भी सहज ममता और स्नेह के कारण दुःखी होगी।

(iii) कवि की माँ अनपढ़ है अतः चाहकर भी भवानी को पत्र नहीं लिख पाती।

(iv) माता स्नेही व ममतामयी है। कवि ममता के आँचल से भवानी को हर प्रकार का सुख प्रदान करती है। बेटे की उपलब्धि व देश-प्रेम के प्रति गर्व का अनुभव करती है।

8. भाव सौन्दर्य—स्वतंत्र भारत में सबका सपना था कि हर घर में खुशियों की दीप माला जलेगी पर हकीकत में पूरे शहर में एक भी दीपक नहीं है। सफलता या प्रकाश के नाम पर कुछ न उपलब्ध नहीं है। नेताओं ने देश के लिए कुछ नहीं किया, मन में आता है कि यह देश छोड़कर कहीं और चले गए। सपने व हकीकत में साम्य नहीं रहा है।

शिल्प सौन्दर्य—कटु यथार्थ का प्रामाणिक वर्णन है। भाषा में सहज प्रवाह और गतिशीलता है। उर्दू राज्यों का बाहुल्य है। 'साये में धूप' में विरोधाभास है। 'चिराग और दरख्त' आशा व सुव्यवस्था के प्रतीक हैं।

अथवा

भाव सौन्दर्य—सामान्य लोगों के विपरीत कवि के पिता उत्साही, साहसी, गतिशील और हँसोड़ हैं उन्होंने बुढ़ापे पर विजय प्राप्त कर ली है। वाणी में बादल सी गर्जन है वे जिन्दादिल व्यक्ति हैं। मौत से डरते नहीं हैं।

शिल्प सौन्दर्य—पिता के व्यक्तित्व का सराहनीय वर्णन है। शेर व बादल का मानवीकरण किया गया है। कार्य में आँधी-तूफान जैसी स्फूर्ति व गति है।

9. (क) मनुष्य को अज्ञान, माया, अहंकार आदि दोषों से बचना चाहिए तभी जीवन लक्ष्य प्राप्त हो सकता है।

(ख) सूर्योदय-बेला में आकाश की उज्ज्वल कांति को देखकर ऐसा लगता है कि मानों वह लक्ष्मी का सुनहरा महल है और सूर्य उसके कंगूरे की भाँति शोभा बढ़ाता है।

(ग) पत्नी को 'पैर की जूती' कहा गया है। इसके माध्यम से भारत के ग्रामीण समाज की उस दकियानूसी भावना पर व्यंग्य किया गया है जो पत्नी को नगण्य मानती है।

(घ) कवि भवानी के सभी भाई भुजाओं के समान सहयोगी और अभिन्न हैं। वे एक-दूसरे के बहुत करीबी, सहयोगी और आत्मीय हैं। उसकी बहनें प्रेम की धारा के समान स्नेहिल हैं।

10. (क) त्रिलोक सिंह विद्यालय में प्राइमरी अध्यापक थे। वे मोहन से प्रभावित थे। उसकी प्रतिभा पर मुग्ध होकर यह भविष्यवाणी की थी कि एक दिन मोहन बहुत बड़ा आदमी बनेगा और स्कूल का तथा उनका नाम ऊँचा करेगा। हय सच सिद्ध हुआ। मोहन को प्राइमरी

स्कूल उत्तीर्ण करने पर छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। यह उसकी प्रतिभा का प्रमाण था।

(ख) मोहन के पिता पुरोहिताई से परिवार का पालन करते थे उनकी इच्छा थी कि मोहन पढ़-लिखकर वंश का दारिद्र्य मिटा दे।

(ग) दूर और ऊँचाई पर विद्यालय होने के कारण मोहन बुरी तरह थक जाता था। बंशीधर तिवारी उसे उत्साह देने के लिए पुराणों की प्रेरक कथाएँ सुनाते थे। उन्हें सुनकर मोहन विद्या-अध्ययन में लगा रहता था।

अथवा

(क) 'क्या खूब' में गहरा व्यंग्य है। रजनी अध्यापकों मुख्याध्यापकों और शिक्षा-निदेशक की मिली भगत या उदासनीता पर हैरान होती है। हैडमास्टर ट्यूशन के मामले को छात्र और अध्यापक के बीच का मामला बताते हैं। शिक्षा निदेशक चाहते हैं कि हैडमास्टर कार्यवाही करें। सभी अपनी जिम्मेदारी दूसरे पर डाल रहे हैं, इस तरह ट्यूशन का रैकेट ज्यों का त्यों बना हुआ है।

(ग) इन संवादों को पढ़कर लगता है कि ट्यूशन की समस्या का कोई समाधान नहीं है। अध्यापक खुलेआम छात्रों को मजबूर कर रहे हैं। हैडमास्टर उन पर कोई कार्यवाही नहीं कर रहे। शिक्षा निदेशक लिखित शिकायत माँगते हैं। छात्र व अभिभावक अनुचित दबाव के कारण चुप रहने को विवश हैं। इसका कोई स्थायी समाधान ही समझ में नहीं आता है।

(ग) शिक्षा बोर्ड का ट्यूशन के प्रति रवैया उचित नहीं है। एक तो वे टालू प्रवृत्ति रख रहे हैं। दूसरे लिखित शिकायत का बन्धन रखे हैं। तीसरे स्वयं प्रेरणा या जगाने पर भी पहल करके जाँच पड़ताल नहीं करना चाहते हैं।

11. (क) असत्य, अन्याय, भ्रष्टाचार आदि कैसा ही अँधेरा क्यों न आच्छादित कर ले किन्तु सत्य की चमक इन सभी दुराचरणों को भेद सकती है। लेखक मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना चाहता है। यदि आज भ्रष्टाचार के पर्वत को चकनाचूर करना है तो युवकों को आगे आना होगा। युवा शक्ति का जागरण ही सभी सफलताओं का रामबाण बन सकता है।

(ख) आजादी से पूर्व किसानों को गरीबी, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, जमींदारों और महाजनों के कड़े लगान और विदेशी शासन के अत्याचार आदि का सामना करना पड़ता था।

(ग) कृषि-विभाग वालों ने जामुन के पेड़ को काटने का मामला हॉर्टिकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे यह तर्क दिया कि गिरने वाला पेड़ फलदार है। इसका सम्बन्ध कृषि से न होकर उद्यान-कृषि से है।

(घ) बौद्धों के माने मंत्रों की बहुत महिमा है यहाँ इन मंत्रों का खूब उच्चार और प्रचार हुआ है। इसलिए लेखक का मत है कि माने पहाड़ियों का नाम माने मंत्रों के नाम से ही होना उचित होगा। इसके और अधिक धार्मिक पवित्रता का बोध सकारात्मक मानसिकता जगाएगा।

12. भू-जल का स्तर गिर रहा है। पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों के कारण मौसम पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। प्रस्तुत जानकारी से हमें पानी के सही स्रोत व उपयोग के तरीकों का ज्ञान होता है। वर्षा के पानी की बूँद-बूँद की उपयोग के लिए प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक घर में एक कुई का निर्माण कर या छत या आँगन में पड़े वर्षा के पानी को एक जगह इकट्ठा किया जा सकता है।

कई राज्यों में यह प्रयोग किया जा रहा है। दक्षिण भारतीय राज्यों में बड़े-बड़े पथरीले जलाशयों में पानी का संग्रह किया जाता है। अधिक व्यास वाली जगह का पानी दूषित होता है और वाष्प बनकर उड़ जाता है। कुईनुमा तकनीक से पानी सुरक्षित रहता है। पानी को फिल्टर लगाकर उपयोग किया जा सकता है।

13. (i) 'नादमय उच्चार' का अर्थ है—उच्चारण में गूँज का होना।

लता के गायन में यह विशेषता है कि उनके एक शब्द की गूँज दूसरे शब्द की गूँज में इस तरह मिल जाती है कि दोनों एक-दूसरे में लीन हो जाते हैं। यह विशेषता केवल लता के स्वर में ही है।

(ii) अर्जुन दा के दो बन्धु-सुखदीप और रमण भी वहीं रहने के लिए आ गए थे। उन दोनों का व्यवहार लेखिका के प्रति अच्छा था। वे बच्चों से भी घुल-मिलकर बातें करते थे। उनके व्यवहार में अपनत्व का भाव था। इसीलिए लेखिका को अच्छे लगते थे।

